यीशुः एक ऐतिहासिक व्यक्ति

क्या नये नियम की पुस्तकें जो पुराने नियम की भविष्यवाणियों को यीशु में पूरा होने की बात कहती हैं, विश्वसनीय हैं? इस शताब्दी में कोई कैसे जान सकता है कि वह यीशु अर्थात नासरत का बढ़ई सचमुच पहली शताब्दी में हुआ था? क्या उसके अद्‌भुत जीवन की कहानी मात्र इच्छा करने वाली बात है? आरम्भिक मसीही लोगों ने पुष्टि की थी कि ऐसा व्यक्ति देह में उनके साथ रहा और उन्होंने उसकी महिमा देखी थी। फिर क्या वे केवल मनुष्य जाति के एक चमत्कारपूर्ण आदर्श की कल्पना ही कर रहे थे?

दृढ़ निश्चयी अविश्वासियों द्वारा की गई सूक्ष्म जांच के बाद उपलब्ध यीशु के कथित जीवन के सुसमाचार के चार वृत्तांत हमारे युग में सबसे अधिक विश्वसनीय ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं।[1] यदि कोई यह मानना चाहे कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना एक कल्पित यीशु के आत्मवंचित अनुयायी थे, तो उसकी यह धारणा गैर मसीहियों के कथनों को सुनकर समाप्त हो जाएगी। आरम्भिक शताब्दियों के गैर-मसीहियों के अधिक उद्धरण उपलब्ध नहीं हैं परन्तु यीशु के बारे में कुछ कथन ही इस सत्य को दिखाने के लिए पर्याप्त हैं कि वह सचमुच पृथ्वी पर हुआ है।[2]

फ्लेवियुस जोसेफस

फ्लेवियुस जोसेफस एक विद्वान फरीसी था जिसका जन्म कलीसिया के आरम्भ होने के सात वर्ष बाद हुआ था। वह नये नियम के पूरा होने के बाद तक जीवित रहा था। वह एक गैर मसीही था, परन्तु यीशु के प्रति बड़ा आदर रखता था:

> अब इसी समय के आस-पास यीशु, एक बुद्धिमान मनुष्य, यदि उसे एक मनुष्य कहना उचित है तो; क्योंकि वह अद्‌भुत काम करने वाला, ऐसे लोगों का शिक्षक था जो सच्चाई को आनन्द से ग्रहण करते थे। उसने बहुत से यहूदियों और बहुत से अन्यजातियों को अपनी ओर खींचा। वह ख्रिस्त था। और जब पीलातुस ने, उन में से प्रमुख लोगों के सुझाव पर, उसे क्रूस का दण्ड दिया था, तो उससे प्रेम करने वालों ने पहले उसे नहीं छोड़ा क्योंकि वह उन्हें तीन दिन के बाद पुन: जीवित दिखाई दिया; जैसा कि ईश्वरीय भविष्यवक्ताओं ने उसके विषय में ये और दस हज़ार अन्य अद्‌भुत बातों की भविष्यवाणी की थी। और मसीही लोगों

का समुदाय, जिसे उसके नाम से जाना जाता है, आज के दिन तक समाप्त नहीं हुआ है।[3]

सुसमाचार के तथ्यों में उसके विश्वास का पता चलने के कारण सम्मान के साथ-साथ शब्दों के इस्तेमाल में लापरवाही ने निश्चय ही जोसेफस का अगला कथन कह दिया।[4] परन्तु उसका सही विश्वास बाद की एक पुस्तक में देखा जाता है, जो शोधक का काम करती है; उस पुस्तक में यीशु को जिसे ''मसीह कहा जाता था'' कहा गया है।[5]

यह प्रमाण पक्का है कि जोसेफस यीशु के परमेश्वर होने में विश्वास नहीं करता था, परन्तु उतना ही मजबूत प्रमाण यह है कि वह विश्वास करता था कि नासरत का यीशु पहली शताब्दी में हुआ था। मसीही लोगों के ''समुदाय'' के दृष्टिकोण से, जोसेफस के शब्द किसी भी ऐसे विचार के विरुद्ध गवाही हैं जो यीशु को एक कल्पित पात्र के रूप में देखता है।

तालमुड

पहली पांच शताब्दियों की विस्तृत यहूदी पुस्तकें जिन्हें तालमुड कहा जाता है (मिशना और गिमारा, दो भागों में) यीशु के बारे में बताती हैं। जैसी अपेक्षा की जा सकती है, इनके उद्धरण अपर्याप्त और प्रतिकूल हैं; गैर वास्तविक यीशु के विचार का तालमुड इन्कार करते हैं।[6] वे ''एली की पुत्री, मरियम के पुत्र, यीशु नासरी'' की बात करते हैं।[7] वे उसके मिसर जाने की बात दोहराते हैं और उसकी आश्चर्यकर्म करने की योग्यता को पहचानते हैं। परन्तु इस शक्ति का श्रेय वे या तो मन्दिर से परमेश्वर के नाम के सही उच्चारण को चुराने या उसके मिसरी जादू करने को देते हैं। मत्ती, थदई, बाउनी और निकुदेमुस समेत यीशु के विशेष चेलों के नामों का उल्लेख है। फसह के समय क्रूसारोहण की बात को छोड़ा नहीं गया है, परन्तु सभी उद्धरणों में बुरी युक्ति से यीशु पर जादूगरी और प्रलोभन का आरोप लगाया गया है।[8]

रब्बियों ने व्यंग्यपूर्ण ढंग से यीशु को ''लटका हुआ'' और ''कुंवारी का पुत्र'' कहा।[9] रब्बियों ने ''सुसमाचार'' शब्द के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए अपनी भाषा में इसका अर्थ ''छूट का पाप'' या ''लिखने वाली पट्टी का पाप'' निकाला था।[10] यदि वे किसी कल्पित यीशु की बात कर रहे होते, तो निश्चय ही उस पर उनके आक्रमण अलग ढंग से होने थे। उनके द्वारा किए उसके प्रत्येक अपमान का आधार उसका नासरत का बढ़ई होना था।

कुरनेलियुस टेसिटुस

कुरनेलियुस टेसिटुस एक और प्रसद्धि इतिहासकार था जिसे रोमी साम्राज्य का एक बहुत ही श्रेष्ठ इतिहासकार माना जाता है। 110 ईस्वी के लगभग उसने नीरो के समय (ईस्वी 54-68) में रोम के तीसरे भाग के जलने का वृत्तांत लिखा। क्योंकि कुछ रोमियों ने कहा था कि नीरो ने स्वयं ही 64 ईस्वी वाली ''बड़ी आग'' लगवाई थी, इसलिए उसने उस आरोप का

खण्डन करने के लिए लिखा था। अपनी रिपोर्ट के भाग के रूप में, टेसिटुस ने लिखा:

> इसलिए, अफ़वाह को रोकने के लिए, नीरो ने, लोगों के एक वर्ग को जिन्हें भीड़ मसीही कहती थी उनकी बुराइयों से तंग आकर, उन्हें अभियुक्त बनाकर उन्हें अति परिशुद्धताओं से दण्ड दिया। ख्रिस्तुस को जिससे उन्हें यह नाम मिला था, सम्राट तिबरियुस के समय पोंतुस पीलातुस द्वारा मृत्यु दण्ड देकर मारा गया था: और इस विनाशकारी अंधविश्वास पर थोड़ी देर के लिए रोक लगी थी, परन्तु नये सिरे से न केवल यह महामारी यहूदियों में ही से शुरू हुई थी, बल्कि रोम में भी फैल गई थी, जहां संसार की सब से खतरनाक और बुरी बातें इकट्ठी होकर अपना घर बना लेती हैं।[11]

उसके लेख दिखाते हैं कि टेसिटुस उन ''मसीहियों'' से घृणा करता था, परन्तु यह भी स्पष्ट है कि वह बड़ी दृढ़ता से मानता था कि ''ख्रिस्तुस'' को ''हाकिम पोंतुस पीलातुस द्वारा मृत्यु दण्ड देकर मारा गया था।''

सी. प्लाइनियुस सिकन्दुस

सी. प्लाइनियुस सिकन्दुस एक और रोमी लेखक तथा टेसिटुस के समय बितुनिया का राज्यपाल था। उसे इसी नाम से प्रसिद्ध अपने चाचा से अलग करने के लिए प्लाइनी ''छोटा'' के नाम से जाना जाता था। प्लाइनी छोटे ने 112 ईस्वी में सम्राट ट्राजन को लिखकर यह सुझाव मांगा कि वह अपने इलाके में बहुत से मसीहियों के साथ क्या करे।

लोगों द्वारा मन्दिरों को छोड़ने और मसीहियों द्वारा मसीह के नाम के लिए इच्छापूर्वक मरने के लिए तैयार होने से प्लाइनी के लिए यह सोचना असम्भव हो गया होगा कि यीशु के बारे में एक कल्पना ''संक्रामक'' रूप ले चुकी है। प्लाइनी की टिप्पणियां मसीही प्रभाव की सीमा को दिखाती हैं: ''इस अंधविश्वास का संक्रमण न केवल नगरों तक ही सीमित है, बल्कि यह गांवों और यहां तक कि पूरे देश में फैल चुका है।''[12]

स्युटोनियुस

टेसिटुस के समकालीन एक और साथी इतिहासकार, स्युटोनियुस (65–135 ईस्वी) ने लगभग 120 ईस्वी में सम्राट क्लौदियुस द्वारा 49 ईस्वी में किए गए एक कठोर कार्य के विषय में लिखा: ''ख्रेस्तुस के बहकावे में आकर यहूदी लोग लगातार गड़बड़ कर रहे थे, इसलिए उसने उन्हें रोम से निकाल दिया।''[13] (जिसे टेसिटुस ने ''ख्रिस्तुस'' कहा था,[14] स्युटोनियुस ने उसे ''ख्रेस्तुस'' कहा[15]।)

लेखक ओरोसियुस ने उल्लेख किया कि यहूदियों का इस प्रकार से निकाला जाना क्लौदियुस के शासन के नौवें वर्ष में हुआ था। जैसे वरनर कैलर ने संकेत दिया है, इसका अर्थ यह है कि रोम में मसीही समुदाय ''क्रूसारोहण के 15 से 20 वर्षों तक अस्तित्व में था।''[16]

स्पष्टत: रोमी लोगों के बीच रहने वाले यहूदियों के मोहल्ले में यहूदी ही यहूदी मसीहियों पर अत्याचार कर रहे थे। उन्होंने इतना उपद्रव किया था कि क्लौदियुस उनसे घृणा करने लग पड़ा। इसी प्रकार सम्राट ने मामले को यहूदियों के अन्दर का झगड़ा मानकर, हर यहूदी को रोम छोड़ने की आज्ञा दे दी थी। अक्विल्ला और प्रिस्किल्ला भी उन निकाले जाने वाले लोगों में थे। कुरिन्थुस में पौलुस को ''अक्विल्ला नामक एक यहूदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस का था; और अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला समेत इतालिया से नया आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी ...'' (प्रेरितों 18:2)। यह दुखद घटना जो यीशु की मृत्यु के बाद बीस वर्ष के भीतर ही घट गई रोम में मसीही लोगों की बढ़ती संख्या की झलक है, कदापि न होती यदि ''ख्रेस्तुस'' न होता। स्युटोनियुस की टिप्पणी पुन: यीशु की ऐतिहासिकता के निष्पक्ष और विरोधी की ओर से एक प्रमाण है।[17]

सारांश

नासरत में रहने वाले पहली शताब्दी के यीशु के होने, सांस लेने व मरने के प्रभाव को तोड़ा-मरोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि जो कुछ उसने किया वह ''कोने में नहीं'' हुआ था (प्रेरितों 26:26)। यीशु पर कैसा भी आक्रमण क्यों न हुआ हो, परन्तु उसकी यथार्थता से इन्कार नहीं किया जाना चाहिए। ''कोई समझदार व्यक्ति पोलियन बोनापार्ट, ओलिवर क्रोमवेल, जूलियस सीज़र या यीशु नासरी के होने के बारे में संदेह नहीं कर सकता।'''यह तथ्य कि जूलियस इस पृथ्वी पर रहा और गाऊल में उसने युद्ध किया और रोमी सीनेट में उसका वध हुआ, सब लोगों द्वारा सत्य और प्रामाणिक इतिहास माना जाता है; परन्तु वे आधुनिक समय के इतना निकट नहीं हैं, न ही इन तथ्यों के कि यीशु इस पृथ्वी पर रहा था, उसने यहूदिया और गलील में अपने सुसमाचार का प्रचार किया और कलवरी पर क्रूस पर चढ़ाया गया था, से आधे भी प्रमाणित नहीं हैं।''[18]

फ्रेड्रिक सी. ग्रैंट ने दावा किया, '''मसीह की कल्पना' के जैसी आधुनिक थ्योरियों को सभी वैज्ञानिक इतिहासकार रद्द करते हैं।''[19] एक लेक्चरर ने इस प्रकार से कहा है:

> यह मानना कि वह [यीशु] कभी नहीं हुआ, उसके जीवन के वृत्तांत आविष्कार ही हैं, अधिक कठिन है और सुसमाचार की कहानियों के अनिवार्य तत्वों को तथ्य मानने से अधिक इतिहासकारों के मार्ग में समस्याएं खड़ी करता है।[20]

एफ. एफ. ब्रूस ने कहा है, ''कुछ लेखक 'मसीह की कल्पना' की भावना से खेल सकते हैं, परन्तु ऐसा वे ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर नहीं करते।''[21]

''यदि नया नियम न लिखा गया होता, और पुरखाओं ने चुप्पी न साधी होती, तो हमें इन बाहरी स्रोतों [अर्थात अविश्वासियों के कथनों] से सामग्री एकत्र करनी पड़ती और मसीहियत के सभी बड़े तथ्यों को पाने के लिए बाध्य हो सकते थे।''[22] फिर तो, मसीहियत का आधार ऐतिहासिक और भौगोलिक है। दूसरे अवास्तविक या संदेही गुरुओं की तुलना

में, यीशु जूलियस सीज़र की तरह ही वास्तविक है। इस प्रश्न को कि ''तुम मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हो कि वह कौन है?'' इसे पकड़ने से कुछ ऐसा ठोस मिल जाता है जिसके आधार पर इसका उत्तर दिया जा सकता है।

पाद टिप्पणियां

[1]एक समय था जब ''नये नियम के लेखों की मूल विश्वसनीयता'' को चुनौती दी जाती थी, ''परन्तु वह समय अब बीत चुका है और स्थाई तौर पर अतीत बन गया है'' (जॉन एच. गर्स्टनर, *रीज़न्स फॉर फेथ* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्ज़, 1960], 86)। [2]गैर मसीही टिप्पणियां ''भी 19वीं शताब्दी के अन्त में कुछ आलोचकों द्वारा बड़ी गम्भीरता से बढ़ाए विवाद का खण्डन करने में सहायक हो सकती हैं, कि यीशु वास्तव में कभी हुआ ही नहीं और यीशु की कहानी एक देवता की मिथ्या का विकास था जो मानवीय रूप में थोड़ी देर के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुआ था'' (*इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका,* 1962 ed., s.v. ''जीज़स क्राइस्ट,'' बाये जरोस्लव जन पेलिकन)। [3]जोसेफस ऐंटीक्विटीस 18.3.3. [4]जोसेफस का कथन इतना मसीह समर्थक है कि बहुत से विद्वानों ने दावा किया है कि पूरा भाग ही एक क्षेपक है। कम कठोर परन्तु कुछ शब्दों को क्षेपक बनाने से वही प्रभाव जाता है (जोसेफस क्लाउस्नर, *जीज़स ऑफ़ नाज़रथ: हिज़ लाइफ, टाइम्स, एण्ड टीचिंग,* अनु. हर्बर्ट डेनबी [न्यूयॉर्क: मैकमिलन कं., 1929], 56)। परन्तु जोसेफस के लेखों की सभी विस्तृत प्रतियों में पूरा भाग है, और इस भाग को 324 ईस्वी से (यूसबियुस द्वारा) उद्धृत किया गया है। जहां तक शास्त्र के प्रमाण का सम्बन्ध है, इस खण्ड की तरह जोसेफस के लेखों के अन्य किसी भी भाग को आसानी से नकारा जा सकता है। केवल काल्पनिक तर्क ही इसे मिटा सकता है। 13 फरवरी 1972 को, यरूशलेम की एक समय रेखा के अधीन, द *न्यूयॉर्क टाइम्ज़* समाचार सेवा ने दसवीं शताब्दी की एक अरबी हस्तलिपि के बारे में बताया जिसमें जोसेफस के पाठ के लिए निम्न पाठभेद है: ''इस समय एक बुद्धिमान व्यक्ति था जिसे यीशु कहा जाता था। और उसका आचरण अच्छा था और [उसे] धर्मी माना जाता था। और यहूदियों और अन्य देशों में से बहुत से लोग उसके चेले बन गए थे। पीलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने और मार डालने का दण्ड दिया था और उसके चेले बनने वालों ने उसके चेले बनना नहीं छोड़ा था। उन्होंने बताया था कि अपने क्रूसारोहण के तीन दिन बाद वह उन्हें दिखाई दिया था और वह जीवित है; अत:, शायद यह वही मसीह था जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने अद्भुत बातें लिखी हैं।'' [5]जोसेफस ऐंटीक्विटीस 20.9.1. [6]एफ. एफ. ब्रूस, द *न्यू टैस्टामेन्ट डॉक्यूमेन्टस: आर दे रिलायबल?* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. इर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1954), 102. यीशु की ऐतिहासिकता में यहूदियों का पूर्ण विश्वास दिखाने के लिए ब्रूस ने क्लाउस्नर, *जीज़स ऑफ़ नाज़रथ,* 18ff, और मौउरिस गोग्युल *लाइफ़ ऑफ़ जीज़स,* 70ff से उद्धृत किया। ''एक व्यक्ति जिसका नाम यीशु या मसीह था, हुआ है,'' और वह ''तिब्रयुस के शासनकाल में फलस्तीन में क्रूस पर चढ़ाया गया था'' (मौउरिस गोग्युल, *लाइफ़ ऑफ़ जीज़स* [न्यूयॉर्क: बार्नस एण्ड नोबल, 1933; 3d इम्प्रैशन, 1958], 70)। [7]थॉमस हार्टवैल होर्नर, *ऐन इन्ट्रोडक्शन टू द क्रिटिकल स्टडी एण्ड नॉलेज ऑफ़ द होली स्क्रिप्चर्स* (फिलाडेल्फिया: ई. लिटेल, 1831)। [8]वहीं। [9]यीशु को *Ha-Taluy,* ''लटकाया हुआ,'' और *Ben Pantera,* ''कुंवारी का पुत्र'' कहा जाता था। *पैन्ट्रा* शब्द यूनानी शब्द *पार्थिनॉस* अर्थात ''कुंवारी'' का बिगड़ा हुआ रूप है। [10]*यूएंजलियोन,* ''सुसमाचार'' को *आवेन-गिलायोन* या *आवोन-गिलायोन* में बदल दिया गया था। (बेबिलोनियन तालमुड, ट्रैक्टेट शबथ, 116ए,बी, एफ. एफ. ब्रूस, 102 में उद्धृत।)

[11]ब्रूस, 117 में उद्धृत, टेसिटुस *ऐनल्ज़* 15.44. [12]सी. प्लाइन्युस सिकन्दुस *एपिस्टल्ज़ ऑफ प्लाइनी* 10.97, जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *ऐविडेन्सस ऑफ़ क्रिश्चियेनिटी,* पार्ट 3 में उद्धृत। [13]स्युटोनियुस *लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* 25.4, ब्रूस 118 में उद्धृत। [14]टेसिटुस *ऐनल्ज़* 15.44, ब्रूस, 117 में उद्धृत। [15]होर्नर, 1:200. [16]वर्नर कैलर, द *बाइबल ऐज़ हिस्ट्री* (न्यूयॉर्क: विलियम मॉरो एण्ड कं., 1958), 379. [17]स्युटोनियुस ने भी रोम की

बड़ी आग के विषय में लिखा और यह कि क्लौदियुस के उत्तराधिकारी नीरो (64-68) ने ''एक अजीब और शरारती अंधविश्वास के आदि लोगों के एक वर्ग अर्थात मसीहियों पर'' दण्ड की आज्ञा दी (*लाइफ़ ऑफ़ नीरो,* 21.2, ब्रूस 118 में उद्धृत)। [18]जे.एल. डैग, *द एविडेन्सस ऑफ़ क्रिश्चियेनिटी।* [19]इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना। [20]एन. बी. हार्डमैन, डॅलास लेक्चर फॉर 1943 में एच. जी. वैल्स।

[21]ब्रूस, 119. [22]हार्वे डब्ल्यू. एवरेस्ट, *द डिवाइन डिमांस्ट्रेशन* (सेन्ट लुइस, क्रिश्चियन बोर्ड ऑफ़ पब्लिकेशन, 1884), 85.